रीतिकाल की आलोचना

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

* रीतिकालीन कवियों के आश्रयदाता लोग जिस श्रेणी की रचना से संतुष्ट होते थे, उस श्रेणी की रचना में जितनी गहराई आ सकती थी, उतनी रीतिकालीन साहित्य में आयी। द्विवेदी जी के अनुसार अपने सीमित क्षेत्र में यह कविता तब भी प्रभावशाली रही है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी का स्पष्ट मानना है कि काव्यशास्त्र का सांगोपांग विवेचन

करनेवाले कवियों ने कोई नयी बात नहीं की है। इसमें मौलिकता का अभाव है। कुछ कवियों ने नवीनता के लिए गद्य का प्रयोग अवश्य किया है, परन्तु इस गद्य में तार्किकता का अभाव है। यही कारण है कि इसमें शास्त्रीय विवेचन की गरिमा नहीं आ पाती है। द्विवेदी जी के अनुसार रीतिकाव्य जितना तत्कालीन समाज के क्लांत चित्त के विश्राम और विनोदन की व्यवस्था करता है, उतना परिष्करण और नियोजन की नहीं। रीतियुग में भक्ति साहित्य के संबंध में द्विवेदी जी का विचार है कि "सत्रहवीं शताब्दी में भक्ति-आंदोलन समाप्त तो नहीं हुआ, परन्तु साहित्य-निर्माण में वह प्रथम और प्रेरणादायक शक्ति भी नहीं रहा।"

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने "रीतिकाव्य को मादक कविता का साहित्य" कहा है। शृंगारी काव्यधारा में रीतिमुक्त भावधारा के अनेक कवियों की चर्चा की गयी है। अंततः द्विवेदी जी रीतिकाल के संबंध में इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि इस काल तक आते-आते हिन्दी कविता का वह तेज क्षीण हो गया था, जो 15 वीं शताब्दी के भक्त कवियों में दिखाई पड़ता था। रीतिकालीन साहित्य के मूल्यांकन में भी उनके भक्ति-साहित्य के आलोचनात्मक मूल्यों का प्रभाव सहज देखा जा सकता है। रीतिकालीन साहित्य के अवगाहन में वे इतने गहरे नहीं उतरे जितने कि भक्तिकालीन साहित्य में।

— क्रमशः